श्रीलक्ष्मणाचार्य की संस्कृत रचना नामरामायण से...

॥ **अरण्यकाण्डः** ॥

दण्डकवनजनपावन राम ॥ दुष्टविराधविनाशन राम ॥
शरभङ्गसुतीक्ष्णार्चित राम ॥ अगस्त्यानुग्रहवर्धित राम ॥
गृध्राधिपसंसेवित राम ॥ पञ्चवटीतटसुस्थित राम ॥
शूर्पणखार्तिविधायक राम ॥ खरदूषणमुखसूदक राम ॥
सीताप्रियहरिणानुग राम ॥ मारीचार्तिकृदाशुग राम ॥
विनष्टसीतान्वेषक राम ॥ गृध्राधिपगतिदायक राम ॥
शबरीदत्तफलाशन राम ॥ कबन्धबाहुच्छेदक राम ॥
राम राम जय राजा राम । राम राम जय सीता राम ॥

॥ **किष्किन्धाकाण्डः** ॥

हनुमत्सेवितनिजपद राम ॥ नतसुग्रीवाभीष्टद राम ॥
गर्वितवालिसंहारक राम ॥ वानरदूतप्रेषक राम ॥
हितकरलक्ष्मणसंयुत राम ॥
राम राम जय राजा राम । राम राम जय सीता राम ॥

॥ **सुन्दरकाण्डः** ॥

कपिवरसन्ततसंस्मृत राम ॥ तद्गतिविघ्नध्वंसक राम ॥
सीताप्राणाधारक राम ॥ दुष्टदशाननदूषित राम ॥
शिष्टहनूमद्भूषित राम ॥ सीतावेदितकाकावन राम ॥
कृतचूडामणिदर्शन राम ॥ कपिवरवचनाश्वासित राम ॥
राम राम जय राजा राम । राम राम जय सीता राम ॥

क्रमशः...

नामरामायण संस्कृत में ऋषि वाल्मीकि द्वारा विरचित महाकाव्य रामायण का लघु संस्करण है। इसके रचयिता श्रीलक्ष्मणाचार्य हैं। नामरामायण में वाल्मीकिरामायण के ही समान बाल, अयोध्या, किष्किन्धा, सुंदर, युद्ध और उत्तर काण्ड हैं। उपर्युक्त सात काण्डों में वर्गीकृत इस ग्रंथ में भगवान् राम के संपूर्ण जीवनचरित्र को 108 नामों के माध्यम से चित्रित किया गया है। नामरामायण दक्षिण भारतीय राज्यों अर्थात् तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और केरल में अधिक लोकप्रिय है। प्रस्तुत अंक में नामरामायण के अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड एवं सुन्दरकाण्ड उद्धृत हैं।